International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 3, March 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

समाजशास्त्रीय शोध मे नारीवादी परिप्रेक्ष्य

डॉ.हरिचरण मीना, व्याख्याता, समाजशास्त्र विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सवाईमाधोपुर,

शोध सारांशः–

मानव समाज को सभी सामाजिक विज्ञानों मे पुरूषवादी परिपेक्ष्य से ही समझने का प्रयास किया गया हैं। लगभग बीसवीं शताब्दी तक के समाजशास्त्रियों ने समाज के एक महत्वपूर्ण पहलू के रूप में लैंगिकता संबंधी मुद्दों पर ध्यान केंद्रित नहीं किया था। लैंगिकता का अध्ययन 1970 के दशक में शुरू हुआ था। 1970 के दशक से पहले लैंगिकता पर न के बराबर काम हुआ था। 1970 के दशक से पहले के विभिन्न विचारकों द्वारा समाज के अध्ययन कार्यों में लैंगिकता को मुख्यधारा में नही रखा गया था। ऐसा लगता था जैसे कि समाज की स्थापना और गठन केवल पुरुषों द्वारा किया गया हो। यह मान लिया गया था कि समाज में पुरुषों के किसी भी अध्ययन में महिलाएं स्वतः शामिल होती हैं। समाज के लैंगिक पहलुओं को चाहे वे व्यवस्थाओं सन्दर्भ मे हो या भूमिकाओं के संदर्भ में हों, उन पर प्रश्न नहीं उठाया जाता था । लैंगिकता को प्राकृतिक क्रम का हिस्सा मान लिया गया था। इसने पुरुषों के अध्ययन में लैंगिकता को अदृश्य प्रतिपादित किया। नारीवादी एवं पद्धति के उद्भव ने समाज के अध्ययन करने के इस तरीके को चुनौती दी। प्रारंभिक चरणों में यह सामाजिक विज्ञान में प्रचलित एवं प्रत्यक्षवादी ज्ञानवाद के एक समालोचक के रूप में उभरा। इसने इस बात पर कि जिस पर सकारात्मकतावादियों द्वारा लैंगिकता को बड़े पैमाने पर और काफी हद तक नजरअंदाज करके अध्ययन प्रस्तुत किया गया था इस तरीके पर नारीवादी ने प्रश्न उठाया। उन्होंने तर्क दिया कि समाज के लगभग सभी पहलुओं में एक लैंगिक परिप्रेक्ष्य शामिल है नारीवादी कार्यप्रणाली के समर्थकों ने एक ऐसी पद्धति के लिए तर्क दिया, जो समाज के लैंगिक पहलुओं को स्पष्ट करें। अतः सामाजिक विज्ञानो मे नारीवादी परिपेक्ष्य के अध्ययन की महत्ता एवं उपयोगिता को समझने के लिए समाजशास्त्रीय शोध मे नारीवादी परिपेक्ष्य को जानना आवश्यक हैं।

मुख्य भाब्दः– नारीवादी, लैंगिकता, मुख्यधारा, तर्कसंगतता, प्रत्यक्षवादी, सकारात्मकतावादी, ज्ञानवाद, सत्ता मीमांसा संबंधी, वस्तुनिष्ठ एवं उद्देश्यपूर्ण

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 3, March 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रस्तावनाः–

मानव समाज को सभी सामाजिक विज्ञानों मे पुरूषवादी परिपेक्ष्य से ही समझने का प्रयास किया गया हैं। लगभग बीसवीं शताब्दी तक के समाजशास्त्रियों ने समाज के एक महत्वपूर्ण पहलू के रूप में लैंगिकता संबंधी मुद्दों पर ध्यान केंद्रित नहीं किया था। लैंगिकता का अध्ययन 1970 के दशक में शुरू हुआ था। 1970 के दशक से पहले लैंगिकता पर न के बराबर काम हुआ था। 1970 के दशक से पहले के विभिन्न विचारकों द्वारा समाज के अध्ययन कार्यों में लैंगिकता को मुख्यधारा में नही रखा गया था ऐसा लगता था जैसे कि समाज की स्थापना और गठन केवल पुरुषों द्वारा किया गया हो। यह मान लिया गया था कि समाज में पुरुषों के किसी भी अध्ययन में से महिलाएं स्वतः शामिल होती हैं। समाज के लैंगिक पहलुओं को चाहे वे व्यवस्थाओं या भूमिकाओं के संदर्भ में हों, उन पर प्रश्न नहीं उठाया जाता था । लैंगिकता को प्राकृतिक क्रम का हिस्सा मान लिया गया था। इसने पुरुषों के अध्ययन में लैंगिकता को अदृश्य प्रतिपादित किया।

नारीवादी अनुसंधान पर होने वाली बहस ज्ञानवाद एवं ज्ञान पद्धति शास्त्र के बारे में बहस करने से लेकर इसके लिए इस्तेमाल किए गए तरीकों पर बहस होती है। शोध करने का कोई एक तरीका नहीं होता है। इस अध्ययन मे शोध करने पर ऐसा लगता है कि नारीवादी तरीके और कार्यपद्धति बदल गई है और समय के साथ विकसित हो गयी है नारीवादी कार्यप्रणाली में व्यापक विषय इस प्रकार से हैं:

1. नारीवादी कार्यप्रणाली का उद्भव अनुसंधान विधियों के एक खंडन के रूप में हुआ जो प्रत्यक्षवादी एवं सकारात्मकतावादी थी और जिन्हें मूल्य तटस्थ होना चाहिए था।

2. समाज का अध्ययन करने के लिए किस पद्धति का उपयोग किया जाना चाहिए. इसके बारे में बहस हुई हैं। इन बहसों और वाद–विवादों ने समाज को एक अनुभूत अनुभव के रूप से आगे बढ़कर वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठ एवं उद्देश्यपूर्ण तरीके से इसका अध्ययन करने की आवश्यकता पर जोर दिया है।

तर्कसंगतता के मूल्य, धार्मिक हठधर्मिता से मुक्ति, प्रगति के विचार और पूंजीवाद के साथ प्रगति को जोड़ना आदि मुख्य विषय थे जो समाजशास्त्र पर हावी थे। ज्ञान पद्धति शास्त्र (एपिस्टेमोलॉजी) और सत्ता मीमांसा संबंधी (ऑन्टोलॉजिकल) अवस्थिति जो उन्होंने ली थीं मुख्यतः एवं प्रत्यक्षवादी थीं। ऐसी मान्यता थी कि मनुष्य ने समाज की बेहतर समझ विकसित की है और वह इसके विकास के लिए प्रतिबद्ध हैं।

समाज का अध्ययन करने वाले विद्वानों के पहले समूह ने समाज के अध्ययन के लिए प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण का उपयोग किया। सामाजिक विज्ञान में प्रत्यक्षवाद का नेतृत्व ऑगस्ट कॉम्टे

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 3, March 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

और एमिल दुर्खाइम जैसे सिद्धांतकारों ने किया था। प्रत्यक्षवादियों का मानना था कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समाज का अध्ययन करना महत्त्वपूर्ण था। उन्होंने समाजों के अध्ययन के लिए सार्वभौमिक कानून बनाने के लिए दूरदर्शिता के साथ काम किया। सामाजिक संरचनाओं को प्राकृतिक दुनिया के तुलनीय रूप में देखा जाता था। यह माना जाता था कि समाज के अध्ययन के लिए प्राकृतिक विज्ञान के तरीकों को लागू किया जा सकता है। प्रत्यक्षवादी का कार्य सामाजिक तथ्यों का अध्ययन और शोध करना था। उन्होंने समाजों का अध्ययन वैसे ही किया जैसे कि एक जीवविज्ञानी एक पौधे या एक जानवर का अध्ययन करता है। शोध का ध्यान केंन्द्र वस्तुनिष्ठता, विश्वसनीयता और वैधता पर केंद्रित किया गया था। उनका मानना था कि वे एक समाजों का अध्ययन तटस्थ तरीके रूप में वैसे ही कर रहे थे, जैसे रसायनशास्त्री या केमिस्ट और जीवविज्ञानी एक रासायनिक प्रतिक्रिया या एक पशु प्रजाति का अध्ययन करते हैं।

मैक्स वेबर जैसे अन्य लोग प्रत्यक्षवादियों के आलोचक थे। वेबर ने व्यक्तिपरक व्याख्या और वेरस्टेन की विधि के माध्यम से समाजों पर शोध कार्य और अध्ययन किया था। उनका मानना था कि प्राकृतिक विज्ञान की पद्धति समाजों के अध्ययन के लिए उपयुक्त नहीं थी। उनके लिए समाजशास्त्रीय अध्ययन इस मायने में मूल्यों से मुक्त था कि इसकी तर्कसंगतता सामाजिक वैज्ञानिकों के समुदाय और उस समय प्रचलित संस्कृति द्वारा परिभाषित की गई थी। वेबर के लिए अनुसंधान करने के लिए विषय वस्तु का विकल्प और वस्तु का चुनाव मूल्य मुक्त नहीं था। हालांकि, एक बार चुनाव हो जाने के अध्ययन मूल्य मुक्त तरीके से किया गया था। वेबरियन अर्थों में अनुसंधान के लिए चुना गया विषय वस्तु अनुसंधान के प्रचलित मानदंडों से प्रभावित होगा। इस प्रकार सामाजिक विज्ञानों में वेबर के लिए वस्तुनिष्ठता का निर्धारण स्वयं शोधकर्ताओं के प्रत्यय सत्ता (वेबलॉजिकल ओरिएंटेशन) द्वारा किया जाएगा

वेबर का मूल्य मुक्त सामाजिक विज्ञान का संस्करण त्रुटिपूर्ण था। नारीवादियों ने तर्क दिया कि शोधकर्ता की सत्ता मीमांसा (ऑन्कोलॉजी) ने अनुसंधान के विषयों का विकल्प और पसंद का निर्धारण किया है। चूँकि अनुसंधान कार्यों में लैंगिकता लगभग अदृश्य थी, इसका मतलब यह था कि सामाजिक विज्ञानों का ज्ञानवादी विज्ञान अपने आप में एक गलत मूल्य पर आधारित था। सामाजिक कार्रवाई की व्याख्या भी शोधकर्ता और अनुसंधान विषय द्वारा साझा वास्तविकता के इस त्रुटिपूर्ण संस्करण पर आधारित थी।

प्रमुख पुरुषवादी पद्धतियों की आलोचना

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 3, March 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नारीवादी कार्यप्रणाली समाज के इस नजरिये के हिसाब से बहुत महत्वपूर्ण थी। समाज में प्रगति के लिए तर्कसंगत मानव विचार के विकास का जिम्मेदार ठहराया गया था। समझ की चूक यह थी कि यह माना लिया गया कि मनुष्य का प्रतिनिधित्व पुरुषों द्वारा किया जाता है। यह मान लिया गया कि मनुष्य और समाज के विकास में योगदान देने वाले लोग पुरुष और उनको भाईबंधु थे। उनके पास ना तो लैंगिकता से संबंधित मुद्दों पर कुछ कहने कि लिए था और ना ही उनके पास इन परिवर्तनों द्वारा महिलाओं पर पड़ने वाले के प्रभावों पर भी कहने के लिए कुछ था। प्रगति और सोच का सार्वभौमिक विचार केवल पुरुषों तक ही सीमित था।

सामाजिक विज्ञानों में प्रचलित प्रमुख प्रत्यक्षवादी कार्यप्रणाली की आलोचना कई स्तरों पर हुई है। मूल्य मुक्त वस्तुनिष्ठता पर जोर देने के कारण ही प्रत्यक्षवादी और सकारात्मकतावादी दृष्टिकोण की आलोचना की गई थी। उन्नीसवीं सदी में कारण और अनुभववाद के प्रभुत्व में वस्तुनिष्ठता एवं निष्पक्षता का एक झूठा एवं गलत आधार था । महिलाओं को अनुसंधान कार्यों से बाहर रखा गया था। उस समय के प्रमुख विचारकों के मत और विचारधारा महिलाओं के प्रति पक्षपातपूर्ण थी। जीन जैक्स रूसो और कांट जैसे विचारकों ने महिलाओं को कमजोर लिंग का समझा और माना । महिलाओं को सच्चाई, तर्कसंगतता और विज्ञान के दूसरे पक्ष पर तैनात किया गया था। इस तरह के विचार और विशेषज्ञता के संस्थानीकरण का अर्थ यह भी था कि समाज का यह दृष्टिकोण वैध और आधिकारिक हो गया।

नारीवादी ने तर्क दिया कि यह सिर्फ एक कथित वस्तुनिष्ठता थी और मूल्य मुक्त अनुसंधान का गठन नहीं करती थी। मन और शरीर के बीच एक कृत्रिम विभाजन हो गया था। सत्रहवीं शताब्दी में रेने डेसकार्टेस के द्वारा किया गया अध्ययन दुनिया का अध्ययन करने में एक क्रांतिकारी परिवर्तन था। उन्होंने कारण, मन और दिमाग के माध्यम से दुनिया पर ध्यान केंद्रित किया था ना कि व्यवस्थाओं और भावनाओं के माध्यम से। यह कार्टेशियन द्वैतवाद मन और पदार्थ के अलगाव में विश्वास करता था। कार्टेशियन द्वैतवाद पश्चिमी सामान्य बोध का एक हिस्सा बन गया। यह माना जाता था कि पुरुष अपने मन के स्वामी थे। वे तर्कसंगत थे और अपने दिमाग पर नियंत्रण कर सकते थे। चूँकि महिलाओं को इसके विपरीत अपनी भावनाओं के साथ अधिक तालमेल रखने वाला और भावुक माना जाता था। कार्टेशियन द्वैतवाद का प्रभाव यह हैं कि वैज्ञानिक जांच बाहरी अवलोकन योग्य दुनिया पर केंद्रित थी। मस्तिष्क अर्थात् यानी विचार और भावनाओं को कोई महत्व नहीं दिया गया।

नारीवादी शोधकर्ताओं ने दावा किया कि महिलाओं का कार्टेशियन वर्गीकरण अनुचित था और पक्षपाती था। नारीवादियों ने कहा कि कारण स्वयं में सामाजिक रूप निर्मित गया था।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 3, March 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उन्होंने तर्क दिया कि ज्ञान की वैधता और यहां तक कि पूछे गए शोध प्रश्न भी पुरुषवादी थे। पूछे गए सभी प्रश्नों और विश्लेषणों को मर्दाना श्रेणियों के विश्लेषण को उपयोग करके किए गए थे। हार्डिंग और स्मिथ जैसे सिद्धांतकारों ने सामाजिक विज्ञानों में मर्दाना पूर्वाग्रह को बताया और इंगित किया। उन्होंने साथ ही तर्क दिया कि शोध का केन्द्र बिन्दु भावनाओं के विपरीत तर्क और तर्क संगतता पश्चिमी श्रेणियों पर रहा है। सामाजिक विज्ञानों में कामकाज के आधिकारिक, सार्वजनिक तरीकों पर ध्यान देना और अनौपचारिक प्रणालियों पर ध्यान नहीं देना एक मर्दाना पूर्वाग्रह का संकेत था । उन्होंने आगे कहा कि पुरुष और महिलाएं अलग–अलग सामाजिक जगत पर अधिकार रखते हैं और इस तरह मानव जाति के सामान्यीकरण के रूप में प्रस्तुत किए गए सामान्यीकरण महिलाओं के लिए अनुचित थे।

उन्होंने तर्क दिया कि पारम्परिक ज्ञानवाद (एपिस्टेमोलॉजी) ने महिलाओं की आवाज को बाहर रखा है। विज्ञान और इतिहास को विशुद्ध रूप से एक पुरुषवादी दृष्टिकोण से लिखा गया है। पारंपरिक समाजशास्त्रीय विश्लेषण का विषय हमेशा पुरुष रहा है । उन्होंने तर्क दिया कि ऐसा विज्ञान तर्कहीन और अप्रतिदेय होता हैं। पुरूषवादी पूर्वाग्रह का मतलब यह था कि नारीवादी दृ ष्टिकोण को मानवतावादी (जिसका अर्थ मर्दाना) परिप्रेक्ष्य का एक हिस्सा माना जाता था।

इसे 1970 और 1980 के दशक की स्त्री केंन्द्रित रोग (गाइनोसेंट्रिक) पद्धति कहा जाता था। नारीवादी अनुसंधान पद्धति ने यह समझ विकसित की कि महिलाओं को पुरुष श्रेणियों के माध्यम से समझना मुश्किल है। श्रेणियों और वर्गों पर भी पुनर्विचार की आवश्यकता थी। स्मिथ जैसे नारीवादियों ने तर्क दिया कि समाजशास्त्र अपरिष्कृत था महिलाओं को उन पुरुषों के नजरिये से प्रस्तुत किया गया जो शासक में केवल औद्योगिक समाजशास्त्र, सामाजिक स्तरीकरण राजनीतिक समाजशास्त्र आदि वर्ग के थे। उन्होंने तर्क दिया कि ''पुरुष सामाजिक जगत'' जैसे पुरुषों के विशिष्ट मुद्दों को शामिल किया गया है। इसमें महिलाएं हाशिए पर आ गयी। महिलाओं की दुनिया और उनका संसार घरेलू क्षेत्र तक ही सीमित रहा। मुख्यधारा के विज्ञान ने बच्चों के पालन–पोषण या घरेलू हिंसा या कार्य बल में महिलाओं की भागीदारी जैसे मुद्दों पर ध्यान दिया। जो ज्ञान पैदा किया गया वह अभिजात वर्ग के लिए था। ज्ञानवाद विज्ञान जो उपयोग किया गया पक्षपाती था। इन शोधकर्ताओं के लिए सामाजिक विज्ञानों के स्त्रीकरण की आवश्यकता थी। स्मिथ ने समाजशास्त्र में महिला विद्वानों के पृथक्करण के बारे में तर्क दिया ।

नारीवादियों ने यह भी तर्क दिया कि इस तरह के एक वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण के कारण जिन पर शोध किया गया था उन्हें अनुसंधान की वस्तु माना गया और उन्हें कोई अभिकरण नहीं दिया गया। शोधकर्ता और शोधकर्ता का संबंध एक पदानुक्रमित संबंध था। शोधकर्ता ज्ञाता थे जिन्होंने शोध

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 3, March 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

किए जा रहे लोगों पर अपनी वर्ग के विचारों को थोपा। 1978 में मारिया ने एक शोध की आवश्यकता का प्रस्ताव रखा जिसमें शोध विषय को न केवल एक वस्तु के रूप में नही गया है, बल्कि दलित, उत्पीड़ित और सताये लोगों की ओर एक सचेत पक्षपात द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है। वहाँ शोध और किये गये शोध की कर्तव्यनिष्ठा और संगणना है। शोध के संज्ञान में निहित है कि शोधकर्ता विवेक विकसित करता है। सिर्फ महिलाओं के उत्पीड़न और अधीनता के अनुसंधान और समझ पर ध्यान नहीं दिया गया है, बल्कि उन्हें चुनौती भी दी जाती है नारीवादी कार्यप्रणाली की शुरुआत महिलाओं की रोजमर्रा की जिन्दगी और नियमित दुनिया से होनी चाहिए। महिलाओं की रोजमर्रा की जिन्दगी को समस्या के रूप में लिया जाना चाहिए न कि एक दिए गए रूप में।

नारीवादी शोधकर्ताओं ने शोध के पारंपरिक तरीकों के उपयोग के खिलाफ अपनी दलील दी। उन्होंने तर्क दिया कि इससे शोधकर्ता और शोध विषय के बीच एक पदानुक्रम निर्माण किया। शोधकर्ता एक ज्ञाता और जानकार के रूप में प्रकट होता है जो सब कुछ जानता है और शोध विषय जिसको शोधकर्ता जानता था। अक्सर शोध विषय पर जो विचारधारा थोपी जाती है, वो शोधकर्ता की होती हैं शोध करने में आने वाली व्यावहारिक कठिनाई जिसमें शोध विषय को एक वस्तु या चीज के रूप में माना जाता है, गलत ज्ञान या झूठे ज्ञान के निर्माण की ओर ले जाती है। जिन लोगों पर शोध किया जा रहा है वे अक्सर अपने वास्तविक अनुभवों को साझा नहीं करते हैं। शोधकर्ता और शोध विषय के बीच शक्ति संबंध कुछ मायनों में नारीवादी कार्यप्रणाली से दूर करता है। हार्डिंग और स्मिथ तर्क देते हैं कि शोधकर्ता और शोधक के विषय को एक ही सतह पर रखने की आवश्यकता है।

नारीवादियों ने एक परिघटनात्मक नृवंशविज्ञान संबंधी और अंतः क्रियावादी दृष्टिकोण का प्रस्ताव रखा जिसमें महिलाओं के अनुभव मायने रखते हैं इसलिए उनके अनुभव को महत्व दिया गया। उन्होंने मात्रात्मक विधि के विपरीत गुणात्मक विधि के उपयोग की वकालत की। यह विधि शोधविषयों के वस्तुकरण की बजाय उन्हें पहचान देने पर आधारित थी।

समाजों की संरचना पर नहीं बल्कि प्रक्रियाओं पर ध्यान केंन्द्रित होना चाहिए। इस अवधारणा को क्षेत्र के भीतर ही उत्पन्न किया जाना चाहिए और इसे पूर्वनिर्धारित नहीं किया जाना चाहिए। इससे शोध विषय वालों को भी आवाज मिलेगी। शोधकर्ताओं को रोजमर्रा की दुनिया के अपने अनुभवों से निर्माण करना चाहिए उपयोग की जाने वाली कार्यप्रणाली निगमनात्मक होने के बजाय अनुभवात्मक और प्रेरणात्मक होनी चाहिए। परिभाषित अवधारणाओं के साथ काम करने के बजाय क्षेत्र के भीतर अवधारणाओं को उत्पन्न करने की आवश्यकता थी। यह सामाजिक विज्ञानों में प्रचलित पुरुषवादी पद्धतियों के सीधे विपरीत था।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 3, March 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गोर्लिक का तर्क है कि महिलाओं को आवाज देना और उनकी आवाज से आवाज मिलाना ही पर्याप्त नहीं होता है। यह केवल महिलाओं के अनुभ पर ध्यान देने की आलोचना कर रही हैं। अक्सर महिलाओं के अनुभव एक झूठी चेतना पर आधारित होते है। यह कहती है कि महिलाओं के अनुभवों के विश्लेषण से परे और आगे जाने की जरूरत है। झूठी चेतना के बारे में मार्क्स की अवधारणा का उपयोग करते हुए गोरेलिक ने अनदेखी की पहचानने करने की आवश्यकता के लिए तर्क दिया। यह महिलाओं की तुलना सर्वहारा वर्ग से करती है। महिलाओं में चेतना के विकास में पूंजीवाद की निरंतरता और पूंजीपति वर्ग के अस्तित्व के लिए महत्व बोध सर्वहारा में होता है वैसा ही एक बोध शामिल है। नारीवादी शोध को भी समाज में महिलाओं की भूमिकाओं को उजागर करना चाहिए। उदाहरण के लिए पति पत्नी की भावनात्मक निर्भरता, कार्यस्थल में कंप्यूटर ऑपरेटरों और सचिवों की भूमिका से पर्दा उठना चाहिए। लिंग अवचेतन का एक अंतर्निहित हिस्सा है और लैंगिकता के कई पहलू बिना प्रश्न उठाये चलते जाते हैं। अनदेखी से परे जा कर देखने चेतना विकास की जरूरत है। गोरेलिक का तर्क है कि अकेले महिलाओं के अनुनयों पर ध्यान देने से समाज के अनदेखे पहलुओं की पहचान करने में मदद नहीं मिलती है। प्रत्यक्ष अनुभवों को साझा करने से ही उत्पीड़न की संरचनाओं पर प्रकाश डाला जाता है और इन अनुभवों का सामूहिक कारण महत्वपूर्ण हो जाता है। यह उत्पीड़न की छिपी संरचनाओं को प्रकट करने में मदद करता है। दबे–कुचलों या निचले स्तर पर सताये गये को आवाज देना ही काफी नहीं है एक गैर–पदानुक्रमित पद्धति का उपयोग दोनों के बीच के द्वंद्व को दूर करने में मदद करता है।

निश्कर्शः–

यह तथ्य कि शोधकर्ता एक महिला है और एक पुरुष नहीं, शोध विषय और शोधकर्ता के बीच संबंधों की प्रकृति को बदल देता है। शोधकर्ता के लैंगिकता का मतलब है कि वह पेशेवर के साथ–साथ व्यक्तिगत मोर्चे पर महिलाओं की दुनिया में पैर पसारने और कदम रखने में सक्षम है। यह शोधकर्ता की ओर से एक संवेदनशीलता प्रदान करता है। यह शोधकर्ता और शोध विषय के बीच संबंधों को फिर से प्रमाणित करता है। स्मिथ एनडी स्पीयर और अन्य नारीवादी शोधकर्ताओं का तर्क है कि नारीवादी अनुसंधान की प्रकृति विषय और वस्तु यानी शोधकर्ता और शोध के बीच पदानुक्रम को दूर करती है। उनका यह भी तर्क है कि अनुभवों और वास्तविकता को सिद्धांत से जोड़ना मुश्किल है और इस प्रकार एक स्थित विश्लेषण महत्वपूर्ण हो जाता है। एक स्थित विश्लेषण पूर्ण सत्य और वस्तुनिष्ठता और अनुभवों के बीच की खाई को पाटने में मदद करता है। शोध विषय के अनुभवों को ध्यान में रखते हुए शोध विषय की गुमनामी दूर करता है। यह शोधकर्ता की बाहरी विचार श्रेणियों को थोपने से भी बचता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. वेबर,मेक्स, ''दा थ्यौरी ऑफ सोशल एण्ड इकोनोमिक ओरगेनाजेशन'' दा प्री प्रेस न्यूयार्क 1947

2. कैरोलीन रामाजोनागलू एण्ड जेनेट हॉलैंड, ''फेमिनिस्ट मेथोडोलॉजी चेलेन्जेज एण्ड चॉवाइस '' सेज पब्लिकेशन लंदन 2002

3. हम्मरसले एस.''ऑन फेमिनिस्ट मेथोडोलॉजी सॉशियोलॉजी'' 1992 पृ.स. 187–206

4. हारडिंग एस.''इन्ट्रोडक्शन इज देयर ए फेमिनिस्ट मैथड'' इन एस.एच.फेमिनिज्म एण्ड मेथेडोलॉजी'' वोल्यूम सोशल साइन्स इश्यू, इंडियाना यूनिवर्सिटी प्रेस ब्लूमीगटन पृ.स.14

5. जग्गर ए.एस.''दा हूमनीटीज इन ए.एस.जग्गर जस्ट मैथड एन इन्टर डिसीप्लीनरी रीडर'' पैराडीज्म पब्लिशर्स बोल्डर यूएसए 2008 पृ.स. 3–6